



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (11-09-15)

परम पवित्र, प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा पवित्रता के व्रत को धारण कर महानता के ऊंचे शिखर पर पहुंचने वाली संगमयुग की महान आत्मायें निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - पवित्रता के सागर, सर्व के दिलों में समाये हुए प्यारे अव्यक्त बापदादा ने हम सबको अपने समान सम्पूर्ण पावन बनाकर कितना महान बनाया है। बाबा कहते बच्चे, ईश्वरीय सेवा का बड़े से बड़ा पुण्य है पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है। अपवित्रता आत्म-घात है, पवित्रता जीय-दान है। ब्राह्मण जीवन के पुरुषार्थ में पवित्रता के आधार पर ही नम्बर हैं। तो हर ब्राह्मण बच्चे को अब यही तीव्र पुरुषार्थ कर पुराने संस्कारों का दाग मिटाकर बिल्कुल साफ शुद्ध बनना है। ऐसे नेचुरल संस्कार बनाने हैं जो स्वप्न वा संकल्प में भी अपवित्रता इमर्ज न हो। बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें सभी इस सबजेक्ट में नम्बरवन लेंगे ना! राखी पर तो सभी ने बहुत अच्छे अच्छे संकल्प किये होंगे! संगमयुग पर हम सबकी यह जीवन बहुत-बहुत अमूल्य है, इसमें हमें अपना टाइम, मनी, एनर्जी जरा भी वेस्ट नहीं करना है। जितना हो सके साइलेन्स की शक्ति जमा कर अपनी अच्छे से अच्छी ऊंची स्थिति बनानी है। पवित्रता के साथ सत्यता में भी बहुत बड़ा बल है। जहाँ सत्यता है वहाँ न तो मिक्सचर बातें होती, न उसमें कोई हेराफेरी होती। तो ऐसी व्यर्थ बातों से बचकर रहना है। जो बात रांग है, ठीक नहीं है, वह कभी नहीं करनी है। जो राइट है, जरूरी है वही करनी है, उसमें फिर हिम्मत बच्चे मदद बाप, कैसा भी कार्य हो, सहज हो जाता है। तो ध्यान रखना है कि खुद से भी कोई गलत काम न हो और सूक्ष्म ऐसा वायुमण्डल बना दें जो दूसरे भी कोई ऐसी गलती न कर सकें। अब हर एक को अपना मित्र आपेही बनना है, अपने लिए वा सबके लिए अच्छे से अच्छा करना है। साथ-साथ भगवान को भी अपना मित्र बनाकर रखना है, तो वह बहुत मदद करता है। भगवान हमारा साथी है, फिर साक्षी होकर हर पार्ट प्ले करते चलो। हर एक में अपनी विशेषता है, दो का पार्ट एक जैसा नहीं हो सकता। हमारी नज़र ऐसी हो जो सबकी विशेषता ही दिखाई दे। अगर मैं किसी के अवगुण देखूंगी तो वो भी मेरे गुण नहीं देख सकेंगे। तो बोलो, ऐसा ही ध्यान रखते सदा हर श्वास, हर संकल्प सफल हो रहा है ना!

बाकी मधुवन की रंगत का समाचार तो आप सब सुनते देखते रहते हो। अभी तक माउण्ट का रास्ता ठीक न होने कारण ज्ञानसरोवर तथा पाण्डव भवन के कार्यक्रम भी शान्तिवन में ही चल रहे हैं। पाण्डव भवन की भट्टियां ट्रेनिंग सेन्टर में, विंग के कार्यक्रम मनमोहिनी वन में चल रहे हैं। साथ-साथ टीचर्स की आनंदमई भट्टियां, कान्फेन्सेज़ आदि कान्फेन्स हॉल, मीटिंग हॉल में हो रही हैं। सब तरफ बाबा के नये पुराने बच्चों की रिमझिम है। अभी हार्ट के डाक्टर्स की कान्फेन्स, राजनेताओं की कान्फेन्स पूरी हुई। अब मीडिया वाले पहुंच रहे हैं। मैं भी विशेष सेवा निमित्त 8 दिन के लिए सिंगापुर, मलेशिया तरफ जा रही हूँ। करनकरावनहार बाबा सब कुछ आपेही करता कराता रहता है। कहते भी हैं सब कुछ करके अपने आप छिपाया। ऐसे अनुभव होता जैसे बाबा ही अंगुली पकड़कर चारों तरफ परिक्रमा लगवा रहा है। आगे आगे बाबा, पीछे-पीछे हम। ऐसा सुन्दर अनुभव होता जैसे बाप और दादा कम्बाइण्ड है, ऐसे हम बच्चे फिर बापदादा के साथ कम्बाइण्ड हैं। अलग हो नहीं सकते। अच्छा, आप सब बेहद सेवाओं के साथ-साथ अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए विशेष योग तपस्या तो कर ही रहे होंगे। सभी को हमारी बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद स्वीकार हो। दादी रतनमोहिनी थोड़े समय से तबियत के कारण अहमदाबाद में हैं, वह भी आप सबको बहुत-बहुत याद दे रही हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



तपस्या वर्ष (अक्टूबर 2015) के लिए विशेष होम वर्क

A) डबल लाइट फरिश्ता स्थिति का अनुभव करो

1) फरिश्ता स्थिति डबल लाइट स्थिति है, इस स्थिति में कोई भी कार्य का बोझ नहीं रहता, इसके लिए कर्म करते बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप यह मन की एक्सरसाइज़ करो। जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा, सदा डबल लाइट रहे, सेवा का भी बोझ नहीं रहा, ऐसे फॉलो फादर करो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे।

2) जैसे ब्रह्मा बाप को चलता-फिरता फरिश्ता, देहभान रहित अनुभव किया। कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई, ऐसे फॉलो फादर करो। सदा देहभान से न्यारे रहो, हर एक को न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्थिति।

3) हर बात में, वृत्ति में, दृष्टि में, कर्म में न्यारापन अनुभव हो, यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, प्यारा-प्यारा लगता है। आत्मिक प्यारा। नम्बरवन ब्रह्मा की आत्मा के साथ आप सभी को भी फरिश्ता बन परमधाम में चलना है, तो मन की एकाग्रता पर अटेन्शन दो, ऑर्डर से मन को चलाओ।

4) फरिश्ता उड़ता है, चलता नहीं है। आप सभी भी उड़ती कला में उड़ते रहो इसके लिए डबल लाइट बनो। जो किसी भी प्रकार का बोझ मन में, बुद्धि में है वह बाप को दे दो।

5) अभी तीव्र पुरुषार्थ का यही लक्ष्य रखो कि मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ, चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ। अशरीरीपन का अभ्यास करो। सेकण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार स्वभाव में डबल लाइट रहो।

6) डबल लाइट रहने वाले की लाइट कभी छिप नहीं सकती। जब छोटी सी स्थूल लाइट टार्च हो या माचिस की तीली हो, लाइट कहाँ भी जलेगी, छिपेगी नहीं, यह तो रूहानी लाइट है, तो इसका हर एक को अनुभव कराओ।

7) फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म से मुक्त बनो। व्यर्थ वा निगेटिव - यही बोझ सदाकाल के लिए डबल

लाइट फरिश्ता बनने नहीं देता। तो ब्रह्मा बाप पूछते हैं - इस बोझ से सदा हल्के फरिश्ते बने हो?

8) फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए अभी-अभी आवाज़ में आते, डिस्कस करते, कैसे भी वातावरण में संकल्प करो और आवाज़ से परे, न्यारे फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी फरिश्ता अर्थात् आवाज़ से परे अव्यक्त स्थिति। यही अभ्यास लास्ट पेपर में विजयी बनायेगा।

9) पहले अपनी देह के लगाव को खत्म करो तो संबंध और पदार्थ से लगाव आपेही खत्म हो जायेगा। फरिश्ता बनने के लिए पहले यह अभ्यास करो कि यह देह सेवा अर्थ है, अमानत है, मैं ट्रस्टी हूँ। फिर देखो, फरिश्ता बनना कितना सहज लगता है!

10) 'मेरा तो एक बाबा'; और मेरा सबकुछ इस 'एक मेरे' में समा जाए। तो एकाग्रता की शक्ति अव्यक्त फरिश्ता स्थिति का सहज अनुभव करायेगी। जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो उतना और ऐसा मन एकाग्र हो जाए इसको कहा जाता है मन वश में है। इस एकाग्रता की शक्ति से स्वतः ही एकरस फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति होती है।

11) ब्रह्मा बाप से प्यार है तो ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनो। सदैव अपना लाइट का फरिश्ता स्वरूप सामने दिखाई दे कि ऐसा बनना है और भविष्य रूप भी दिखाई दे। अब यह छोड़ा और वह लिया। जब ऐसी अनुभूति हो तब समझो कि सम्पूर्णता के समीप हैं।

12) फरिश्ता अर्थात् जिसका एक बाप के साथ सर्व रिश्ता हो अर्थात् सर्व सम्बन्ध हो। एक बाप दूसरा न कोई जिसके सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ होंगे उसको और सब सम्बन्ध निमित्तमात्र अनुभव होंगे। वह सदा खुशी में नाचने वाले होंगे।

13) जैसे साकार रूप में एक ड्रेस चेन्ज कर दूसरी ड्रेस धारण करते हो, ऐसे साकार स्वरूप की स्मृति को छोड़ आकारी फरिश्ता स्वरूप बन जाओ। फरिश्तेपन की ड्रेस सेकेण्ड में धारण कर लो। यह अभ्यास बहुत समय से चाहिए तब अन्त समय में पास हो सकेंगे।

14) फरिश्ता बनने के लिए चेक करो कि चारों ओर के बन्धन से मुक्त होते जाते हैं! अगर नहीं होते तो सिद्ध है फरिश्ता जीवन समीप नहीं है। एक के साथ सर्व रिश्ते निभाना यह है ठिकाना। सदा अपना अन्तिम फरिश्ता स्वरूप स्मृति में रखो तो जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति बन जायेगी

15) अब अपने दिल की शुभ भावनायें अन्य आत्माओं तक पहुँचाओ। साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। हर एक ब्राह्मण बच्चे में यह साइलेन्स की शक्ति है। सिर्फ इस शक्ति को मन से, तन से इमर्ज करो। एक सेकण्ड में मन के संकल्पों को एकाग्र कर लो तब फरिश्ते रूप द्वारा वायुमण्डल में साइलेन्स की शक्ति के प्रकम्पन फैला सकेंगे।

B) डबल लाइट बनो

1) डबल लाइट अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से हल्कापन स्वतः हो जाता है। ऐसे डबल लाइट को ही फरिश्ता कहा जाता है। डबल लाइट अर्थात् सदा उड़ती कला का अनुभव करने वाले।

2) डबल जिम्मेवारी होते भी डबल लाइट रहो। डबल लाइट रहने से लौकिक जिम्मेवारी कभी थकायेगी नहीं क्योंकि ट्रस्टी हो। ट्रस्टी को क्या थकावट। अपनी गृहस्थी, अपनी प्रवृत्ति समझे तो बोझ है। अपना है ही नहीं तो बोझ किस बात का। बिल्कुल न्यारे और प्यारे, बालक सो मालिक।

3) अपनी सब जिम्मेवारी बाप को दे दो अर्थात् अपना बोझ बाप को दे दो तो स्वयं हल्के हो जायेंगे, बुद्धि से सरेन्डर हो जाओ। अगर बुद्धि से सरेन्डर होंगे तो और कोई बात बुद्धि में नहीं आयेगी। बस सब कुछ बाप का है, सब कुछ बाप में है तो और कुछ रहा ही नहीं।

4) डबल लाइट अर्थात् संस्कार स्वभाव का भी बोझ नहीं, व्यर्थ संकल्प का भी बोझ नहीं - इसको कहा जाता है हल्का। जितने हल्के होंगे उतना सहज उड़ती कला का अनुभव करेंगे। अगर योग में ज़रा भी मेहनत करनी पड़ती है तो जरूर कोई बोझ है। तो बाबा-बाबा का आधार ले उड़ते रहो।

5) सदा यही लक्ष्य याद रहे कि हमें बाप समान बनना है तो जैसे बाप लाइट है वैसे डबल लाइट। औरों को देखते हो तो कमजोर होते हो, सी फादर, फॉलो फादर करो। उड़ती कला का श्रेष्ठ साधन सिर्फ एक शब्द है - 'सब कुछ तेरा'। 'मेरा' शब्द बदल 'तेरा' कर दो। तेरा हूँ, तो आत्मा लाइट है। और जब सब कुछ तेरा है तो लाइट (हल्के) बन गये।

6) जैसे शुरू-शुरू में अभ्यास करते थे - चल रहे हैं लेकिन स्थिति ऐसी जो दूसरे समझते कि यह कोई लाइट जा रही है। उनको शरीर दिखाई नहीं देता था, इसी अभ्यास से हर प्रकार के पेपर में पास हुए। तो अभी जबकि समय बहुत खराब आ रहा है तो डबल लाइट रहने का अभ्यास बढ़ाओ। दूसरों को सदैव आपका लाइट रूप दिखाई दे - यही सेफ्टी है। अन्दर आवें और लाइट का किला देखें।

7) जैसे लाइट के कनेक्शन से बड़ी-बड़ी मशीनरी चलती है। आप सभी हर कर्म करते कनेक्शन के आधार से स्वयं भी डबल लाइट बन चलते रहो। जहाँ डबल लाइट की स्थिति है वहाँ मेहनत और मुश्किल शब्द समाप्त हो जाता है। अपनेपन को समाप्त कर ट्रस्टीपन का भाव और ईश्वरीय सेवा की भावना हो तो डबल लाइट बन जायेंगे।

8) कोई भी आपके समीप सम्पर्क में आये तो महसूस करे कि यह रुहानी हैं, अलौकिक हैं। उनको आपका फरिश्ता रूप ही दिखाई दे। फरिश्ते सदा ऊंचे रहते हैं। फरिश्तों को चित्र रूप में भी दिखायेंगे तो पंख दिखायेंगे क्योंकि उड़ते पंखी हैं।

9) सदा खुशी में झूलने वाले सर्व के विघ्न हर्ता वा सर्व की मुश्किल को सहज करने वाले तब बनेंगे जब संकल्पों में दृढ़ता होगी और स्थिति में डबल लाइट होंगे। मेरा कुछ नहीं, सब कुछ बाप का है। जब बोझ अपने ऊपर रखते हो तब सब प्रकार के विघ्न आते हैं। मेरा नहीं तो निर्विघ्न।

10) सदा अपने को डबल लाइट समझकर सेवा करते चलो। जितना सेवा में हल्कापन होगा उतना सहज उड़ेंगे उड़ायेंगे। डबल लाइट बन सेवा करना, याद में रहकर सेवा करना - यही सफलता का आधार है।

11) जिम्मेवारी को निभाना यह भी आवश्यक है लेकिन जितनी बड़ी जिम्मेवारी उतना ही डबल लाइट। जिम्मेवारी निभाते हुए जिम्मेवारी के बोझ से न्यारे रहो इसको कहते हैं बाप का प्यारा। घबराओ नहीं क्या करूँ, बहुत जिम्मेवारी है। यह करूँ, वा नहीं... यह तो बड़ा मुश्किल है। यह महसूसता अर्थात् बोझ है! डबल लाइट अर्थात् इससे भी न्यारा। कोई भी जिम्मेवारी के कर्म के हलचल का बोझ न हो।

12) सदा डबल लाइट स्थिति में रहने वाले निश्चय बुद्धि, निश्चिन्त होंगे। उड़ती कला में रहेंगे। उड़ती कला अर्थात् ऊंचे से ऊंची स्थिति। उनके बुद्धि रूपी पाँव धरनी पर नहीं।

धरनी अर्थात् देह भान से ऊपर। जो देह भान की धरनी से ऊपर रहते वह सदा फरिश्ते हैं।

13) अब डबल लाइट बन दिव्य बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊंची चोटी की स्थिति में स्थित हो विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति लाइट और माइट की शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ। इस विमान में बापदादा की रिफाइन श्रेष्ठ मत का साधन हो। उसमें जरा भी मनमत, परमत का किचड़ा न हो।

14) सदा इस स्मृति से डबल लाइट रहो कि मैं हूँ ही बिन्दु। बिन्दु में कोई बोझ नहीं। आंखों के बीच में देखो तो बिन्दु ही है। बिन्दु ही देखता है, बिन्दु न हो तो आंख होते भी देख नहीं

सकते। तो सदा इसी स्वरूप को स्मृति में रख उड़ती कला का अनुभव करो।

15) सेवा में स्वयं को निमित्त समझकर डबल लाइट रहना यह भी भाग्य है क्योंकि किसी भी प्रकार का बोझ खुशी की अनुभूति सदा नहीं करायेगा। जितना अपने को डबल लाइट अनुभव करेंगे उतना भाग्य पदमगुणा बढ़ता जायेगा।

16) डबल लाइट बन दिव्य-बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊंची चोटी की स्थिति में स्थित हो, अव्यक्त वतनवासी बन विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

24-4-13

मधुबन

“पढ़ाई के चारों सब्जेक्ट में ध्यान रख सफल होना ही पढ़ाने वाले प्रति रिगार्ड है”

(दादी जानकी)

दुनिया में कॉपीराइट करने का हक नहीं होता है, दोष माना जाता है लेकिन यहाँ पर बाबा ने कॉपीराइट करने की छुट्टी दे दी है। भले करो, जैसा करना हो जितना करना हो भले करो। बाबा को ऐसा कॉपी करो जो एज इट इज़ बाप समान बन जाओ। देहधारी को कॉपी करेंगे तो फेल हो जायेंगे। बाबा को कॉपी करना राइट है। मतलब मुझे क्या करने का है... यह बात बुद्धि में अगर है तो बाकी कुछ बात नहीं है। इसमें निश्चय चाहिए, फिर विजय हमारी हुई पड़ी है। कभी भी न अपने में संशय, न किसी में संशय। संशय समय वेस्ट करता है यानि समय जो मुझे साथ देवे ना, वह नहीं देता है। भगवान मेरा साथी है, जिसका साथी स्वयं भगवान क्या करेगा आंधी तूफान...। तो सामने आंधी तूफान हो या पीछे आने वाला हो हमको कोई परवाह नहीं, साथी भगवान है यह ट्रायल करके देखो।

कमजोरी की बातें न चाहते भी यूज करते हैं तो यह नुकसानकारक हैं। किसी से भी थोड़ा भी लगाव व्यक्ति से या वैभव से है या अपने कमरे से है तो वो क्या ऊंच पद पायेंगे? तुम्हारा कमरा ऐसा हो जैसे बाबा का कमरा, तो समझें तपस्वीमूर्त है, देख करके ही खुश हो जायें यानि कोई

भी प्रकार की कमी को कोई रियलाइज करता है ना, तो वह बिचारी जा सकती है क्योंकि वो समझती है मेरा अन्त आने वाला है। यह जो ब्राह्मणों के संगठन में बैठी है वह ब्राह्मणों को छोड़ेगी नहीं क्योंकि क्या से क्या बन गये यह कोई साधारण बात नहीं है। बाबा ने बकरी समान मैं मैं करने वाली को शेरनी शक्ति बना दिया। तो अन्दर अपने आपको पॉजिटिव पॉवरफुल बनाने की जिसको इच्छा है, बाबा उसे मदद करता है। और जिसे अपनी नेचर को जरा भी चेंज नहीं करना है, तो वो कहेंगे मैं कोशिश करती हूँ कि यह जो नेचर है, थोड़ा चेंज करे ना, तो बहुत ऊंच पद पा सकते हैं। हमारे से भी प्रैक्टिकली स्नेह ले सकते हैं। कोई छोटे बच्चे भी मुस्कराते हुए घड़ी-घड़ी टोली लेने आते हैं। मुस्कराना नहीं आयेगा तो कहेंगे टाइम ही नहीं है, करके बहाना बनायेंगे। सुस्ती, आलस्य, अलबेलापन, बहाना, सूक्ष्म किसी न किसी से ईर्ष्या है तो मुस्कराना नहीं आयेगा इसलिए बाबा कहते मेरी याद में रहो तो पहले वाला जंक उतर जावे और अभी कोई जंक चढ़ न जावे इसलिए परिपक्व याद की ऐसी स्थिति बनाओ और सदा उसको यूज करो। थोड़े में खुश नहीं होना चाहिए।

जैसा अन्न वैसा मन असर होता है। बाबा की याद में

पकाया हुआ, भोग लगाया हुआ भोजन खाना चाहिए। बाबा का बन करके जिसने यह परहेज रखा है वो बहुत महान है। बाबा देखकर बहुत खुश होता है। और उनकी प्रकृति भी उनको अच्छा साथ देती है। तो जीना हो तो कैसे, मरना है तो कैसे मरो, आओ तो मैं बताऊँ इसलिए जो आता है क्लास में सुना देती हूँ, सुनो न सुनो, करो न करो आपकी मर्जी, पर प्रकृति के स्वभाव के वश न रहो। अपने स्वभाव के वश रह करके आओ मेरे से हँलो करो। क्या है कि सूक्ष्म देह-अभिमान अन्दर से पकड़के बैठा है, छोड़ता नहीं है क्योंकि छोड़ना ही नहीं चाहते हैं ना। स्वभाव के वश में हैं ना। सूक्ष्म संशय है बाबा में, स्वयं में, एक दो में। किसी ने कहा क्या निशानी है जो मायाजीत बनने का मुझे भाग्य मिला है! मैंने कहा विकल्प तो क्या कोई ऐसा व्यर्थ संकल्प भी नहीं आयेगा। जो कोई काम का न हो वो संकल्प आयेगा नहीं। कारणों, अकारणों संकल्प चला तो वाणी में भी आया, कर्म में भी आया और सम्बन्ध में भी आ गया तो फिर रूहानियत कहाँ गयी? पंख टूटे हुए पंखी की तरह हो जाते हैं। आप सारा दिन क्या करते हो, पता नहीं कैसे बिताते हो? किसी को अच्छा रंग लगाया क्योंकि संग का रंग लग जाता है। कई हैं जिनकी जीवन टोली और ब्रह्माभोजन खाने से बनी है।

दिव्य दृष्टि से बाबा को अच्छी तरह से देख लो सब, बाबा

की दिल कैसी है? दिलवाला की दिल कैसी है? सबके दिलों को एक सेकेण्ड में समझ करके दिल ले लेता है। मैं भी कोशिश कर रही हूँ टाइम न लगे जैसे बाबा दिल ले लेता है, वैसे दिलाराम से दिल ऐसी ही लग जाये जो दिल खुश हो जाये। अभी प्रैक्टिकली मेरे दिल से पूछो तो सारा दिन रात स्वप्नों में भी यही रहता कि बाबा की दिल कैसी है, ऐसी मेरी दिल बन जाए। जो कोई अपनी बात शब्दों में नहीं सुनाये, सुनाने के पहले ही उनकी दिल का संकल्प या शुभ भावना पूरी हो जाये। तो ऐसा सिम्पल और सैम्पल बनना माना बाबा की दिल को समझ के ऐसा बनना। दिल का आवाज़ शब्दों में नहीं होता है, सूक्ष्म कैच कर लेते हैं तो फिर शब्दों में आने की जरूरत नहीं है, सहज समझ जाते हैं। अगर ऐसे दिलवाला मन्दिर में रहना है तो बाबा के दिल को समझो। व्यर्थ समय नहीं गँवाओ, यह श्रीमत शिव भगवानुवाच है ब्रह्मा बाबा के द्वारा। आज उसी श्रीमत अनुसार ही चारों सबजेक्ट में ध्यान रखने में सफल हैं तब कहेंगे यह भी पढ़ाने वाले के प्रति रिगार्ड है। ऐसे जो चारों सबजेक्ट में पास होंगे, पास विथ ऑनर में जो आयेंगे, वही अष्ट रत्न होंगे। समय अनुसार पुरुषार्थ ऐसा हो जो सफलता छिम-छिम करके आये। तो कभी क्वेश्चन नहीं उठता है सफलता कब होगी! छिम-छिम करके आ रही है।

30-6-15

“सदा मौज में रहने के लिए अपनी अवस्था कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी बनाओ”

(गुल्जार दादी)

कोई भी बात होती है, भले हिलाने वाली बातें आती हैं। बहुत कुछ लेन-देन भी चलती है। लेकिन कोई भी परिस्थिति में मेरी अवस्था उस हलचल में हिले नहीं। अपनी मौज को न छोड़ें। सदा कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी रहूँ। कोई भी बात मुझे टच न करें, ऐसा हो सकता है? अगर बुद्धि में लक्ष्य है, मुझे ऐसा चलना है, ऐसा बनना है तो कोई असम्भव बात नहीं है। जैसे शुरू शुरू में हम आये तो लक्ष्य मिला ना कि कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे रहना है। बाबा की मुरलियों में भी भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रहने के लिये मिलती रहती हैं। और संगठन है तो उसमें अटेन्शन तो रखना ही पड़ता है,

भले साधारण हैं लेकिन चलेंगे तो सही, बोलेंगे तो सही ना। उसमें चेक करें कि मैं मर्यादापूर्वक हूँ, चलते-चलते सारा समय ठीक रहता हूँ? या कोई न कोई बात बीच में आ जाती है? ठीक चलते-चलते भी कभी बीच में आ जाती है, तो उसकी जजमेन्ट के लिए चाहिए सचमुच योगयुक्त आत्मा। बाबा की याद में बैठके बाबा द्वारा ही चेक कराये कि मैं ठीक हूँ या नहीं? और बाबा की टचिंग तो होती है, ऐसे नहीं है मैं चाहूँ बाबा से और बाबा हमको नहीं देवे, हमारी गलती हो सकती है, बाबा की नहीं। भले पहले नहीं पता पड़ता है लेकिन चलते-चलते फिर मन में आ जाता है, सही बात भी

आती है, वो कैच करें बस। ऐसे नहीं बात को भी चला लेवे। कर लेंगे, मेरी बुद्धि में स्पष्टीकरण तो है कि यह करना है लेकिन करने की हिम्मत कम है। जब करना ही है तो करना ही है, फिर उसको हल्का नहीं छोड़ें। किसी की भी मदद चाहिए तो ले सकते हैं। जो भी ऐसा हो जो राय देवे और उस पर चलने से फर्क हो। तो कोई भाई बहनों से भी राय ले सकते हैं, थोड़ा वेरीफाई कराना चाहिए। जो समझदार हैं, वो तो सब बातें समझ जाते हैं लेकिन फिर भी वेरीफाई करना चाहिए।

और खुशी कभी नहीं गंवाये, बातें तो आयेंगी। यहाँ इतने जो भी रहते हैं, उनके साथ रहना माना साथ निभाना और भिन्न-भिन्न रहते हैं, सेन्टर पर रहेंगे तो 2,3 यहाँ तो ढेर रहते हैं, कईयों का आना जाना भी होता है। फिर भी हम तो आप लोगों को हिम्मतवान समझते हैं। जो आप ने फौरन ही जज किया, तो क्या करना है क्या नहीं? कई अभी तक भी जज कर रहे हैं, करना क्या है? फायदा भी नज़र आता है और धोखा भी समझ में आता है। पता अन्दर पड़ता है लेकिन नाम के कारण बेफिक्र हो जाते हैं। तो हमें अपने तरफ से अपने को भी चेक करना है और दूसरे जो साथी रहते हैं उनसे भी चेक कराना है। अगर अन्दर सेटीस्फाई हो कि मैं ठीक हूँ, तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर चलते चलते रूक जाते हैं और खुशी कम हो जाती है तो जरूर चेक करना चाहिए। खुशी कई बीमारियों को खत्म करती है। खुशी नहीं होगी तो कई बीमारियाँ आ जाती हैं। फिर यहाँ संगठन का बन्धन भी है। आप चाहो आज यह नहीं करूँ, आपको करना ही पड़ता है। जरूर यह बन्धन है लेकिन यह बन्धन फायदे वाला है। वो तंग होके नहीं करें। पहले बुद्धि को समझाये राइट क्या है? और अपने आगे बड़ों को तो देखते ही हैं, बड़े जो करते हैं उन्हीं की विशेषता तो गाई जाती है।

पहली बात खुश रहें, खुशी फेस से नहीं जाये। जो ज्यादा सोचते हैं ना, यह करूँ, यह करूँ, फिर उसमें ही लग जाते हैं। एम जो है वो बदल जाता है। तो खुश रहना यह तो आप सीखे हैं या नहीं कि कभी भूल जाता है? जब समय आता है तो भूलता तो नहीं है? वैसे बहुत अच्छा चलते हैं लेकिन जब पेपर का समय आता है ना, उस समय थोड़ा खिसक जाता है। तो खुशी कभी नहीं जानी चाहिए, खुशी माना कोई हंसना नहीं लेकिन दिल खुश। कोई छोटी छोटी बातों में अटक नहीं जायें क्योंकि यहाँ संगठन है। एक अलग नहीं है, संगठन है। तो बहनें भी ठीक है! सब खुश! खुशी में सभी हाथ उठाते

हैं। अच्छा है, खुश रहें लेकिन दूसरे को सुखी करने के लिए अपना सुख जो है वो नहीं छोड़ें। कई बार क्या करते हैं, समझो नियम है या कुछ भी कायदे हैं तो उसके लिए करना ही पड़ता है, यह कहके अपने को छुड़ाते हैं, यह नहीं होना चाहिए। डरते हैं अन्दर पता नहीं क्या होगा, करूँ या नहीं करूँ... इस चक्कर में भी कई रहते हैं। लेकिन एक बात जरूर याद रखें खुशी अपनी नहीं गंवायें। ऐसे 2,3 बातें अगर आई और उसी के ही सोच में चले गये तो अचानक कुछ भी हो जाये, पता ही नहीं पड़ेगा। तो जैसे बाबा कहते हैं अमृतवेले एक बारी अपने को अच्छी तरह से चेक जरूर करें कि कहाँ धोखा तो नहीं खा रहा हूँ? क्योंकि यहाँ संगठन है, अकेले नहीं हैं, संगठन में पहले थोड़ा बदलते हैं फिर देखते हैं, यह भी तो चल रहा है ना, तो उसको देख करके फिर आता है मैंने भी किया तो क्या हुआ! वो नहीं होना चाहिए।

बाबा की शिक्षा सदा याद रहनी चाहिए। कोई भी बात सोचें, पहले यह सोचें श्रीमत क्या है? लेकिन मूल बात है कि शक्ल में खुशी नहीं हो तो यह बहुत खराब बात है। खुशी होना चाहिए, नहीं तो ज्ञान की भी ग्लानि होती है। अच्छा यह रहते हैं, अच्छा कामकाज तो करते हैं, कोई कम्प्लेन्ट नहीं करते हैं लेकिन खुश भी नहीं रहते हैं, यह क्यों? प्रश्न पूछते हैं। तो यह चेक करना चाहिए कि मैं खुश रहता हूँ? खुशी एक चीज़ है जो जीवन के लिए जरूरी है, वो होनी चाहिए। कोई भी आता है तो क्या आके देखते हैं? यह रहे तो पड़े हैं लेकिन इनकी शक्लें क्या बोलती हैं! एक एक से बातें तो नहीं करेंगे बैठके। शक्ल बोलती है, बोल-चाल बोलता है, कितना भी कोई छिपाने की कोशिश करे कि मैं चुप ही चुप रहता हूँ, बस और किससे बोलता नहीं हूँ... लेकिन चुप भी कहाँ तक रहेंगे? कारोबार में तो आना पड़ेगा ना, संगठन के बन्धन में बन्धना तो पड़ेगा। कई तो थक जाते हैं, समझते हैं पता नहीं यह कब तक होगा? मतलब हमारा यही है कि खुशी नहीं गायब होनी चाहिए। फालतू नहीं सोचना चाहिए। काम का सोचना वो तो जरूरी है। तो सभी खुश है, यहाँ देखो आपको सेवा का चांस मिला है, कम मिला है क्या! आपको बाबा ने पसंद कर लिया, रहने का सर्टीफिकेट मिल गया, यह कोई कम नहीं है। इसका फायदा भी होता है, नुकसान भी होता है। तो अपनी सम्भाल आपेही करनी है, भले संगठन है उसका फायदा होता है लेकिन फिर भी हरेक को अपनी चलन से देखना चाहिए, संस्कार भी भिन्न-भिन्न

होते हैं ना।

तो सभी खुश हैं, खुश तो होंगे। यहाँ पालना ही ऐसी है, जो कोई ऐसा नहीं होगा जो खुश न हो। कभी-कभी कोई बात होती हो तो हो सकता है। बाकी जो पालना का रूट रखा हुआ है, चलने का खाने का पीने का, वह मैं समझती हूँ कि चल सकते हैं। सिर्फ अपने को थोड़ा सा इज़ी नहीं छोड़ दें। सन्यासी थोड़ेही हैं फिर प्वाइंट्स तो बहुत हैं ना, उनके पास भी प्वाइंट्स बहुत होते हैं। जो चल रहे हैं, चल रहे हैं तो किस आधार से तो चलता होगा ना! तो नोट अच्छी तरह से करो, कोई उल्टा आधार तो नहीं हो गया है? मैं समझूँ मैं बहुत राइट हूँ और होवे नहीं, यह भी हो सकता है, इसलिए वेरीफाई करा लेना चाहिए, अगर फेथ है किसमें में तो। बाकी खुश तो यहाँ सब रहते होंगे, खाना, पीना, उठना, बैठना सब साधन बहुत अच्छे हैं और क्लीयर हैं, ऐसे है राइट है यह? कोई ऐसी मुश्किल बाहर की नहीं है। वैसे भी बचपन में कोई अच्छे चलने वाले होते हैं, तो उनको माँ बाप भी यही शिक्षा देते हैं कि खुश रहना। तो कभी आपको मुश्किल लगता है? लगता है तो बताओ, नहीं तो लिखके दो क्योंकि कोई को बताने में भी शर्म आता है, तो लिखत में दे सकते हैं लेकिन अपने को ठीक रखो, मतलब कुछ भी करो लिखत दो, बोलो नहीं बोलो, वह हरेक अपने आप सोचे। अभी किसी को कुछ बोलना हो तो बोल सकते हो, फिर पीछे संकल्प नहीं चलाते रहना।

समझो संगठन में भण्डारे में कोई ड्यूटी है, भण्डारे में तो कई कनेक्शन होते हैं, सभी में ठीक हैं, एक दो में लूज हैं थोड़ा, तो भी अवस्था तो ठीक नहीं होंगी ना क्योंकि अभी आप लोग सिकीलधे हो जो पहले से ही स्वाहा हो गये। दिनप्रतिदिन तो बढ़ते जाते हैं, तो यह नियम अभी सबको मजबूत करना चाहिए। भले चल रहे हैं लेकिन अन्दर बातें बहुत हैं। और जब तक बातें अन्दर हैं तब तक प्रोग्रेस हो ही नहीं सकती है। शर्म के मारे भी नहीं कोई सुनाते हैं, कोई

ज्यादा दिमाग के कारण भी नहीं सुनाते हैं। दोनों प्रकार हैं क्योंकि हमने तो शुरू से बचपन से लेके पास किया है, तो यह तो होता ही है। इसमें बड़ी बात नहीं है। चलना ही है, जब सरेण्डर किया है तो रहना तो है ही ना। चलना तो पड़ेगा ही। जब चलना ही पड़ेगा तो क्यों नहीं खुशी खुशी से चले! चलना तो पड़ेगा लेकिन करना क्या है? यह भी तो अपने लिए सोचे ना। तो किसकी मदद चाहिए, कोई सैलवेशन चाहिए, कुछ भी हो सकता है... तो खुश जरूर रहो। मौज कभी नहीं छोड़ो। अच्छा, समय तो बीत जायेगा, यह रोके भी बीत सकता है, हंसके भी बीत सकता है। रहना तो है ही। तो अभी क्यों नहीं अपना समय सफल करें, रहना तो है यह तो फैसला हो गया, सरेण्डर की लिस्ट में आया माना फैसला हुआ। जब फैसला हुआ तो उसी प्रमाण चलना चाहिए। दो बातें नहीं सोचो। अच्छा, अभी तो चलो दो मास चले हैं, आगे देखेंगे। ऐसे आगे आगे करते रह जाते हैं, फैसला अपना जल्दी करो। टाइम नहीं वेस्ट करो। नहीं करना है तो ठीक है, ऐसे करना है उसका सोचो भले, लेकिन टाइम वेस्ट नहीं करो। कइयों की आदत सोचने की इतनी ज्यादा है, जो उसी सोच में ही मैं समझती हूँ जीवन ही जाती होगी। ठीक किया, नहीं किया, ठीक किया, नहीं किया... क्या करें, फिर भी यह चलता है, आगे क्या करें? इसमें ही समझो खोज में लगे हुए हैं। कर भी रहे हैं और सोच भी रहे हैं।

हम ब्रह्माकुमार हैं तो ब्रह्माकुमार माना फॉलो फादर। बाबा को देखो ना, चलो गलतियाँ तो होती हैं, किसी से भी हो सकती हैं। लेकिन मुझे क्या करना है वो सोचो। तो सभी खुश हैं पहले, वो तो ना करेंगे नहीं। लेकिन आखिर बनना तो है ना, और कोई आयेंगे क्या बनने वाले! हम ही होंगे ना। इतना समय तक क्या किया? हाँ, ना, हाँ, ना... करूँ न करूँ, उसमें ही गया। तो एक तो मौज में सदा रहें, बातें बातों से होंगी। अपनी मौज और खुशी नहीं गंवाओ। उल्टी खुशी नहीं। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“सर्व की बुद्धियों को परिवर्तन करने का साधन साइलेन्स की भट्टी”

जहाँ मेरा नहीं, सब तेरा-तेरा है, तो कोई चिन्ता करने की बात ही नहीं है। बाबा ने सब चिन्ताओं से मुक्त कर दिया, सब दुःख दूर किया है, तू मिला सब कुछ मिला बाकी क्या

इच्छा करूँ। जिसको जो भी ड्रामा अनुसार प्रवृत्ति मिली है उनको प्यार से निभाओ। सबसे पहली प्रवृत्ति तो इस देह के कर्मेन्द्रियों की ही है। साथ-साथ मीठे बाबा ने हमको कर्मेन्द्रिय

जीत का वरदान भी दिया है। आत्मा तो कर्मेन्द्रियों का राजा है ना, तो आर्डर से अपनी कर्मेन्द्रियों रूपी प्रवृत्ति को चलाओ, ऐसी योग की शक्ति चाहिए तब कहेंगे मास्टर सर्वशक्तिमान। तो बाबा ने वरदान दिया है - मा.सर्वशक्तिवान बनो। लेकिन इन सब अनुभवों के लिए पहले देही-अभिमानि बनने का पुरुषार्थ करो। इसके लिए जितनी-जितनी हमारी लगन बढ़ेगी तो लगन की अग्नि जगाने का साधन है यह भट्टी। तो आप सबको हमने क्यों बुलाया और क्यों भट्टी रखी है? हमारी आश है कि

1. बाबा कहते, तुम बच्चे जब ऐसी सम्पूर्ण स्थिति बनायेंगे, तुम्हारी सूरत जब ऐसी दिव्य और अलौकिक होगी तब यह पुरानी दुनिया विनाश हो नई दुनिया की स्थापना होगी। तो क्या हम राजयोगी बाबा की यह आश पूरी नहीं करेंगे? दूसरा, बाप को प्रत्यक्ष करना है। जब आप सभी की स्थिति ऐसी सम्पन्न दिव्य बनें, ऐसा आप सबका चेहरा दिव्य हो तब ही आप बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। और वैसे भी बाबा कहते तुम्हें सारी विश्व को साइलेन्स का दान देना है। तो इस भट्टी से सभी अपने को ऐसा सम्पन्न बनाओ, विकर्म विनाश करो लेकिन साथ-साथ मन का, मुख का मौन, व्यर्थ संकल्पों का मौन रखो जिससे संकल्प, समय, शक्ति सब पावरफुल हो। और साइलेन्स की ऐसी पावर चारों ओर फैले जो यह हमारी भट्टी विश्व को सूक्ष्म ऐसा वायब्रेशन दे जो सचमुच विश्व में शान्ति की किरणें जायें क्योंकि हमारा लक्ष्य है विश्व में शान्ति हो।

तो सारे विश्व को शान्ति का दान मिले, यह शान्ति की शक्ति ही सबकी बुद्धियों को बदलेगी और जो हमारी वा बाबा की इच्छा वा आश है - एक तो सबको मालूम हो कि कौन है तू कौन है, वह जानें। और दूसरा - शान्ति की किरणें चारों ओर फैलें जिससे शान्ति की स्थापना हो अथवा यह अशान्ति जो है वो खत्म हो जाये। तो ऐसी भट्टियां जोर-शोर से सभी करो जो विश्व को शान्ति का दान मिले। यह सूक्ष्म वायब्रेशन जायें, कई लोग वायब्रेशन को बहुत मानते हैं। तो हमें विश्व को वायब्रेशन देना है ताकि सबकी सूक्ष्म मनोवृत्तियां समय अनुसार परिवर्तित हों। जब समय अनुसार साइंस दान इतनी प्रगति कर रहे हैं, चाहे विनाश के लिये, चाहे नई दुनिया के लिये नई-नई खोज कर रहे हैं फिर भी वह तो चांद और तारों तक ही जा पाते और हमें जाना है

सूर्य, चांद से भी पार... तो कौन ऊंचे हुए? साइंस बड़ी या साइलेन्स बड़ी? तो क्यों नहीं हम ऐसी साइलेन्स की शक्ति चारों तरफ फैलावें, तब यह पुरानी दुनिया परिवर्तन हो और हम अपनी नई पावन शान्ति की दुनिया में चलें जो है देवताई दुनिया, उसके साथ यह जो संगमयुग की घड़ियां हैं, वह हमें जीवन में रहते जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करायें। तो ओ बाबा हम तो आपके साथ सच्ची जीवनमुक्ति क्या है, उसकी मौज ले रहे हैं, ऐसा अनुभव करना है।

अपने संकल्पों के बन्धनों की रस्सियां जो बांधी हैं, उसको खोल दो तो कोई बन्धन नहीं है। वह रस्सी है मनमत। मनमत की रस्सियां छोड़ो, मनमत माना देहअभिमान, तो इसी रस्सी को छोड़ो तो हम आत्मा मुक्त हैं अथवा बाबा के संग हम खुशियों का वरदान ले रहे हैं। अरे हमें भगवान ने कहा है तुम्हारी दृष्टि वृत्ति सब पावन हो। हम पावन थे फिर रावण ने पतित बनाया, अब तो हम बाबा की पावन सजनियां हैं, पावन थे, पावन हैं और पावन रहेंगे। ऐसी इतनी स्वयं में पावन रहने की शक्ति हो। कोई नहीं है माया जो हमारे सामने चूँ-चूँ भी करे, चुप तू गेट-आउट, तेरे को ताकत नहीं। नो आर्डर। माया को कागज का शेर कहा जाता है, तो कागज के शेर से कभी डरना नहीं है। अपने को सच्चे शेर समझो। हम है प्रैक्टिकली डायरेक्ट रचना, तो हम योगी हैं, भोगी नहीं। इसलिये इस भट्टी में ऐसे वरदानों से भरपूर हो जाना और बाबा से इतनी नज़दीक में रूहरिहान करना जो बिल्कुल आप लोगों को अनुभव हो कि कैसे बाबा ने हमें अपनी गोदी में ले लिया, ऐसे उड़ जाओ जैसे शान्तिवन में नहीं हम वतन में बैठे हैं, नहीं तो अव्यक्त वतन को यहाँ वतन बना दो। ऐसे समझो हम यहाँ अव्यक्त वतन में बैठे हैं। शान्ति की शक्ति का स्व सहित सर्व को अनुभव हो। लेकिन यहाँ से जाने के बाद भी बिल्कुल यह अनुभव हो हम पक्के फरिश्ते, बाबा समान सम्पन्न बनके आये हैं, कर्मातीत बनके रहेंगे, हमारा कोई भी यह देह-अभिमान, संस्कार आदि, कोई भी माया का चक्कर वा टक्कर नहीं होगा। इसलिए संस्कार परिवर्तन की यह वेला है, ऐसा इस भट्टी में एक एक श्वास सफल हो तब कहेंगे वाह बाबा! वाह आपके पाण्डव! वाह शान्तिवन की भट्टी! अच्छा - ओम् शान्ति।